विजयनगर साम्राज्य

1- विजय नगर साम्राज्य एवं शहर 1336 में हरिहर-I एवं बुक्का-I द्वारा स्थापित किये गये थे। वे संगम के पुत्र थे। .

2- हरिहर-I एवं बुक्का-I के तीन अन्य भाई थे। इनके संगम के पुत्र होने के कारण इनके द्वारा स्थापित वंश को संगम वंश भी कहा जाता है।

3- जिन अन्य वंशों ने विजयनगर साम्राज्य पर शासन किया वे क्रमश: शाल्व, तुलुव एवं अरविदु थे।

4- विजयनगर साम्राज्य के कट्टर प्रतिद्वंद्वी बहमनी सुल्तान थे जिनके साथ इन्होने कई युद्ध लड़े। विवाद का कारण तुंगभद्रा दोआब क्षेत्र, कृष्णा-गोदावरी, क्षेत्र एवं मराठवाड़ा का कोंकण क्षेत्र था।

विजयनगर साम्राज्य

वंश - संस्थापक - काल

1. संगम - हरिहर एवं बुक्का - 1336-1485

2. शाल्व - शाल्व नृसिंहदेव - 1485-1505

3. तुल्व - वीर नृसिंह - 1505-1570

onlineinstitutionclasses.in

4. अरविदु - तिरूमाला - 1570-1649

तुलव वंश वीर नृसिंह (1505-1509)

1- तुलव वंश का संस्थापक वीर नृसिंह था।

2- वह नरसा नायक का पुत्र था।

3- इमादी नृसिंह की हत्या कर यह सिंहासन पर बैठा।

कृष्णव देव राय (1509-1529)

1- कृष्ण देव राय, वीर नृसिंह का छोटा भाई था।

2- वीर नृसिंह के मुख्य मंत्री सालुव तिम्मा ने वीर नृसिंह के दो सौतेले भाई एवं उसके छोटे पुत्र को बंदी बनाने के बाद कृष्णदेव राय को सिंहासन पर बैठा दिया। .

3- कृष्णदेव राय ने पुर्तगाली गवर्नर अल्बूकर्क के साथ मैत्रतापूर्ण व्यवहार रखा एवं उसे भटकल में एक किला बनाने की अनुमति दे दी।

4- उसने विजय महल का निर्माण करवाया एवं हज़ाराराम मंदिर (हम्पी) एवं विट्ठल स्वामी मंदिर का विस्तार करवाया। उसने यवनराज स्थापनाचार्य (बहमनी राज्य का सुधारक) एवं अभिनव भोज (साहित्य का संरक्षक) की उपाधियाँ धारण की। इसे

onlinetutionclasses.in

आंध्र-पितामह एवं आंध्र भोज के नाम से भी जाना जाता है।

5- वह तेलुगु एवं संस्कृत दोनो भाषा का महान एवं बुद्धिमान दार्शनिक भी था।उसकी राजनीति से संबंधित तेलुगु भाषा की कृति अमुक्त माल्यद एवं संस्कृत नाटक जाम्बवती कल्याण है।वह तमिल, तेलुगु एवं कन्नड दार्शनिकों का आश्रयदाता भी था।

6- उसका दरबार अष्ट-दिग्गज (आठ महान कवि) से सुसज्जित था। उनमें से तेनालीराम एक था।

7- कृष्ण देव राय के बाद उसका सौतेला भाई अच्युत राय सिंहासन पर बैठा।

8- विजयनगर साम्राज्य के विनाश के तुरंत बाद एक यात्री सीजर फ्रेडरिक विजयनगर यात्रा पर आया था।

9- 1543 में सदाशिव राय सिंहासन पर बैठा एवं उसने 1567 तक शासन किया। राम राय उसका मुख्य नेता था। .

10- बीजापुर, गोलकुण्डा एवं अहमदनगर ने मिलकर विजयनगर साम्राज्य को बानीहट्टी (तालिकोट) में 1565 में हराया। इसे तालीकोट का युद्ध या राक्षस टांगडी का युद्ध भी कहा जाता है।

onlinetuitionclasses.in

विजयनगर साम्राज्य के लक्षण

1- यह एक राजशाही साम्राज्य था।

2- साम्राज्य के लिए भूमि-कर राजस्व का मुख्य स्त्रोत था।

3- विजयनगर साम्राज्य में सोने के सिक्के चलन में थे। इन्हे वराह कहा जाता था। जिनका वज़न 52 ग्राम था। चांदी एवं तांबे के सिक्के चलन में नही थे। परत, वराह का आधा हिस्सा होता था।

4- अधिक शासक वैष्णववाद के समर्थक थे।

5- विजयनगर साम्राज्य में महिलाओं को सम्मानीय स्थान प्राप्त था।

विजय नगर साम्राज्यर का भ्रमण करने वाले प्रसिद्ध यात्री .

यात्री - देश - शासक

1. इब्न–बतूता - Morocco - हरिहर-I

2. निकोलोडि कोन्टे - इटली (वेनिस) - देवराय-I

3. अब्दुर रज्जाक - पर्शिया - देवराय-II

4. दुमिंगो-पेस - पुर्तगाल - कृष्णदेव राय

Onlinetuitionclasses.in

5. दुअर्त बारबोसा - पुर्तगाल - कृष्णदेव राय

बहमनी साम्राज्यब

1- बहमनी साम्रज्य का सर्वप्रख्यात शासक फिरोज शाह बहमनी था (1397-1422)

2- वह धार्मिक शास्त्रों से अच्छी तरह परिचित था यथा-कुरान की टिप्पणियों, न्याय शास्त्र आदि।

3- वह प्राकृतिक विज्ञानों का भी ज्ञाता था-यथा वनस्पति शास्त्र, ज्यामिती, तर्क आदि।

4- वह एक अच्छा सुलेख एवं कवि था।

.

5- फिरोजशाह द्वारा सबसे महत्वपूर्ण कार्य हिंदुओं को प्रशासन कार्यों में सम्मिलित करना था।

6- फिरोजशाह बहमनी का विवाह देवराय-I की पुत्री से हुआ था। तथापि देवराय-I ने उसे 1419 में कृष्णा-गोदावरी क्षेत्र के विवाद में युद्ध में हराया था।

7- अहमदशाह-I जिसे प्रसिद्ध सूफी संत गेसू दराज के साथ रहने के कारण संत कहा जाता था, फिरोजशाह के स्थान पर सिंहासन पर बैठा।

onlinetuitionclasses.in

8- अहमदशाह-I ने अपनी राजधानी को गुलबर्ग से बिदर हस्तांतरित कर दिया।

9- महमूद गवान के प्रधानमंत्रीत्व में अपनी शाक्ति एवं अपनी क्षेत्रीय सीमा में अत्यधिक वृद्धि की।

बहमनी साम्राज्यर के भाग

साम्राज्य - संस्थापक - वंश

1. गोलकोण्डा - सुल्तान कुली हमदानी या कुतुब उल मुल्क - कुतुबशाही

2. बीजापुर - युसुफ आदिल खान - आदिल शाही

.

3. अहमदनगर - अहमद - निजाम शाही

4. बिरार - फातुल्लाह इमादुल - इमाद शाही मुल्क

5. बिदर - कासिम - बारिद शाही

बाबर (1526-1530)

1- भारत में मुगलवंश की स्थापना बाबर ने की थी।

2- वह पिता की तरफ से तैमूर एवं माता की तरफ से चंगेज़ खाँ का वंशज है। बाबर का जन्म 1483 में फरगना में हुआ था।

onlinetutionclasses.in

3- उसने भारत अभियान पर सबसे पहले 21 अप्रैल,1526 को पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

4- पादशाह की उपाधि धारण करने वाला वह पहला शासक था। .

5- उसने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी या बाबरनामा तुर्की भाषा में लिखी जिसका बाद में फारसी में अनुवाद अब्दुल–रहीम खानखाना ने किया।

6- 26 दिसम्बर 1530 में बाबर की मृत्यु हो गई। पहले इसके शव को आगरा के आरामबाग में दफनाया गया परन्तु नौ वर्ष बाद उसके शव को ले जाकर काबुल में दफनाया गया।

7- घाघरा का युद्ध मध्यकालीन भारत का प्रथम युद्ध था जो भूमि एवं जल दोनो पर एक साथ लड़ा गया।

युद्ध - वर्ष - परिणाम

1. पानीपत का प्रथम युद्ध - 1526 - बाबर ने इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

2. खानवा का युद्ध - 1527 - बाबर ने राणा सांगा को परास्त किया।

onlinetuitionclasses.in

3. चंदेरी का युद्ध - 1528 - बाबर ने मेदिनी राय को हराया.

4. घाघरा का युद्ध - 1529 - बाबर ने अफगान एवं बंगाल की संयुक्त सेना को हराया।

हुमायूँ (1530-1540 और 1555-1556)

1- बाबर के बाद हुमायूँ सिंहासन पर बैठा लेकिन तैमूरी वंश की प्रथा के चलते उसे अपने भाईयों के साथ सत्ता का बंटवारा करना पड़ा।अत: सुलेमान को बदख्शान, कामरान को काबुल एवं कंधार एवं अस्करी व हिंदाल को सिंध प्रान्त दे दिये गए।

2- इसने दिल्ली में दीनपनाह का निर्माण कर उसे अपनी राजधानी बनाया।

3- उसे शेरशाह के रूप में कडे प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

4- शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को 1539 में चौसा के युद्ध में हराया।

5- इसके बाद 1540 में भी शेरशाह ने उसे बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में परास्त किया।

.

onlinetuitionclasses.in

हुमायूँ (1530-1540 और 1555-1556)

6- कन्नौज हार के बाद हुमायूँ भारत से बाहर चला गया। वह पर्शिया के सफवी वंश के पास एक शरणार्थी के रूप में पहुँचा एवं पर्शियन राजा ताहमस्प ने इसका शाही स्वागत किया।

7- 1545 में शेरशाह की मृत्यु के बाद हुमायूँ पुन: भारत लौटा एवं कंधार को अपने अधिकार में ले लिया। उसने शाह ताहमस्प की सहायता से काबुल में अपना शासन पुनर्रस्थापित कर लिया।

8- इसने 1555 में सिकंदर सूर की सेना को हरा आगरा एवं दिल्ली को अपने कब्ज़े में ले लिया।

9- इसकी बहन गुलबदन बेगम ने हुमायूँ की जीवनी हुमायूँनामा लिखी।

10- हुमायूँ की पत्नी हमीदाबानू बेगम ने दिल्ली में उसका मकबरा बनवायां जिसे हुमायूँ का मकबरा कहा जाता है।

11- 1556 में अपने पुस्तकालय की सीढियों से गिरने की वजह से हुमायूँ की मृत्यु हो गई।

Onlinetuitionclasses.in

आप हमारे हिंदी माध्यम में उपलब्ध Handwritten + Typewritten फुल नोट्स खरीद सकते है नाम मात्र कीमत के साथ .....

1. Mathematics Notes Price 320 Rupees

2. English Grammer Notes Price 260 Rupees

3. General Science Notes 250 Rupees

4. Psychology / Bal Vikas Notes 250 Rupees

5. Education + Teaching Methods Notes 150 Rupees

Note :- Psychology + Education + Teaching Methods Both Books Combine Pack Just 350 Rupees

6. Haryana G.K Notes Price 150 Rupees

7. Rajasthan G.K Notes Price 150 Rupees

8. हिंदी व्याकरण नोट्स 150 Rupees

9. Computer Notes 120 Rupees

10. Reasoning Notes 180 Rupees

Most Important

11. G.K With Trick Notes 220 Rupees

12. History Notes 180 Rupees

13. Geography Notes 180 Rupees

14. Polity Notes 150 Rupees

onlinetutionclasses.in

15. World G.K Notes 150 Rupees

16. Economics Notes 90 Rupees

17. Environment Notes 90 Rupees

Note:- Sr. No 11 to 17 तक के सभी नोट्स आप मात्र 750 रूपये में खरीद सकते हो जिससे आपको सीधे सीधे 310 रूपये का फायदा होगा

तथा जो साथी सभही नोट्स लेना चाहता है तो उसको 3040 रूपये के नोट्स मात्र 2100 रूपये में ले सकता है

किसी भी विषय के नोट्स खरीदने के लिए 9464770619 पर Whatsapp msg करे Please Call ना करे या फिर जिस समय ऑनलाइन हो उसी समय call करे

धन्यवाद

Sangeeta Kumari

onlinetuitionclasses.in